वैदिक पर्यावरण-दर्शन एवं सतत विकास लक्ष्यों का तुलनात्मक अध्ययन

*निधि शर्मा

सारांश

वैदिक पर्यावरण-दर्शन प्रकृति और मानव के मध्य संतुलित एवं सामंजस्यपूर्ण संबंध पर आधारित है। वेदों में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को जीवन के मूल तत्व मानकर उनके संरक्षण पर विशेष बल दिया गया है। दूसरी ओर, संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्य (SDGs) पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समानता तथा आर्थिक विकास के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करते हैं। वैदिक चिंतन में "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" जैसी अवधारणाएँ पृथ्वी के प्रति श्रद्धा और उत्तरदायित्व का भाव उत्पन्न करती हैं, जबकि सतत विकास लक्ष्य जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग पर बल देते हैं। तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों का उद्देश्य पर्यावरणीय संतुलन एवं मानव कल्याण है। वैदिक दृष्टिकोण नैतिक आधार प्रदान करता है, जबकि सतत विकास लक्ष्य उसके व्यावहारिक एवं वैश्विक क्रियान्वयन का मार्ग प्रस्तुत करते हैं।

मुख्य शब्द: वैदिक पर्यावरण-दर्शन, सतत विकास, सतत विकास लक्ष्य (SDGs), पर्यावरण संरक्षण, वैदिक साहित्य।

1. प्रस्तावना

वर्तमान समय में मानव सभ्यता अभूतपूर्व पर्यावरणीय संकट का सामना कर रही है। जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापवृद्धि, वनों की कटाई, जैव-विविधता का ह्रास, जल एवं वायु प्रदूषण जैसी समस्याएँ पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर चुनौती बन गई हैं। औद्योगीकरण, शहरीकरण तथा प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन ने पर्यावरणीय संतुलन को प्रभावित किया है। ऐसी परिस्थितियों में पर्यावरण संरक्षण और संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग की आवश्यकता पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

इसी संदर्भ में "सतत विकास" (Sustainable Development) की अवधारणा विकसित हुई, जिसका उद्देश्य वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के हितों को सुरक्षित रखना है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2015 में 17 सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals—SDGs) को स्वीकार किया, जिनका उद्देश्य गरीबी उन्मूलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वच्छ जल, जलवायु

कार्रवाई तथा स्थलीय एवं जलीय पारिस्थितिकी तंत्रों का संरक्षण सुनिश्चित करना है। ये लक्ष्य वैश्विक स्तर पर संतुलित एवं समावेशी विकास की दिशा में महत्वपूर्ण पहल हैं।

भारतीय वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण का विचार अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रूप में उपलब्ध है। वेदों में प्रकृति को केवल भौतिक संसाधन न मानकर दिव्य शक्ति एवं जीवन के आधार के रूप में स्वीकार किया गया है। अथर्ववेद में पृथ्वी के प्रति श्रद्धा का भाव व्यक्त करते हुए कहा गया है—

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।"

(अथर्ववेद 12.1.12)

अर्थात् "पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।" यह मंत्र मानव और प्रकृति के मध्य घनिष्ठ एवं उत्तरदायी संबंध को दर्शाता है। इसी प्रकार वेदों में जल, वायु, वनस्पति तथा समस्त जीव-जगत के संरक्षण पर विशेष बल दिया गया है।

अतः वैदिक पर्यावरण-दर्शन एवं सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है। यह अध्ययन न केवल प्राचीन भारतीय ज्ञान-परंपरा और आधुनिक वैश्विक विकास दृष्टि के मध्य साम्य एवं भिन्नताओं को स्पष्ट करेगा, बल्कि वर्तमान पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान हेतु वैदिक मूल्यों की उपयोगिता को भी रेखांकित करेगा।

2. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य वैदिक पर्यावरण-दर्शन की मूल अवधारणाओं का अध्ययन करना तथा सतत विकास लक्ष्यों की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण करना है। इसके अतिरिक्त वैदिक पर्यावरणीय सिद्धांतों एवं सतत विकास लक्ष्यों के मध्य विद्यमान समानताओं और भिन्नताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। साथ ही वर्तमान पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान में वैदिक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता का मूल्यांकन भी किया जाएगा।

3. अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन की प्रकृति वर्णात्मक एवं तुलनात्मक है, जिसके माध्यम से वैदिक पर्यावरण-दर्शन और सतत विकास लक्ष्यों का विश्लेषण किया गया है। शोध के प्राथमिक स्रोतों में ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद एवं उपनिषद सम्मिलित हैं, जबकि द्वितीयक स्रोतों में पुस्तकें, शोध-पत्र, रिपोर्टें तथा विभिन्न सरकारी दस्तावेजों का उपयोग किया गया है।

4. वैदिक पर्यावरण-दर्शन : सैद्धान्तिक आधार

वैदिक साहित्य में पर्यावरण के प्रति गहन संवेदनशीलता एवं संरक्षण की भावना विद्यमान है। वेदों में प्रकृति को केवल भौतिक संसाधन नहीं माना गया, बल्कि उसे दिव्य शक्ति एवं जीवन के आधार के रूप में स्वीकार

किया गया है। वैदिक ऋषियों ने मानव और प्रकृति के मध्य सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करने पर बल दिया है। पर्यावरण संरक्षण की आधुनिक अवधारणाएँ जिन सिद्धांतों पर आधारित हैं, उनके मूल तत्व वैदिक साहित्य में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को जीवन के अनिवार्य घटक मानते हुए उनके संरक्षण को मानव का कर्तव्य बताया गया है।

4.1 प्रकृति के प्रति वैदिक दृष्टिकोण

वैदिक साहित्य में प्रकृति को पूजनीय तथा जीवनदायिनी माना गया है। ऋषियों ने प्रकृति के विभिन्न तत्वों को देवतुल्य स्वीकार करते हुए उनके प्रति सम्मान एवं संरक्षण की भावना विकसित की। अथर्ववेद का प्रसिद्ध पृथ्वी सूक्त पृथ्वी के प्रति श्रद्धा, प्रेम और संरक्षण की भावना का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें पृथ्वी को माता और समस्त जीवों को उसका पुत्र कहा गया है—

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।"

(अथर्ववेद 12.1.12)

अर्थात् "पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।" यह मंत्र मानव और प्रकृति के मध्य आत्मीय संबंध को व्यक्त करता है तथा पृथ्वी के संरक्षण का नैतिक आधार प्रस्तुत करता है।

वेदों में जल को जीवन का आधार माना गया है। जल के बिना जीवन की कल्पना असंभव है। ऋग्वेद में कहा गया है—

"आपो हि ष्ठा मयोभुवः।"

(ऋग्वेद 10.9.1)

अर्थात् "हे जल! तुम सुख और कल्याण प्रदान करने वाले हो।" यह मंत्र जल संरक्षण एवं उसकी पवित्रता बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

इसी प्रकार वायु को प्राण का आधार माना गया है। स्वच्छ वायु के बिना जीवन संभव नहीं है। यजुर्वेद में वायु को औषधि स्वरूप बताते हुए कहा गया है—

"वात आ वातु भेषजम्।"

(यजुर्वेद 36.17)

अर्थात् "वायु हमारे लिए औषधि के समान कल्याणकारी हो।"

अग्नि को ऊर्जा, शुद्धि एवं जीवन-शक्ति का प्रतीक माना गया है। ऋग्वेद का प्रथम मंत्र अग्नि की महत्ता को दर्शाता है—

“अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।”

(ऋग्वेद 1.1.1)

अर्थात् “मैं अग्नि की स्तुति करता हूँ, जो यज्ञ का पुरोहित एवं देवताओं तक पहुँचाने वाला है।” अग्नि ऊर्जा एवं पर्यावरणीय संतुलन का महत्वपूर्ण तत्व मानी गई है।

4.2 पंचमहाभूत सिद्धांत

वैदिक दर्शन के अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि पाँच मूलभूत तत्वों—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—से निर्मित है। इन्हें पंचमहाभूत कहा जाता है। पर्यावरणीय संतुलन इन तत्वों के संतुलित अस्तित्व पर निर्भर करता है। पृथ्वी समस्त जीव-जगत का आधार है। यह भोजन, खनिज, वनस्पति तथा आवास प्रदान करती है। अतः भूमि संरक्षण और मृदा उर्वरता का संरक्षण अत्यंत आवश्यक माना गया है। जल जीवन का मूल स्रोत है। वैदिक साहित्य में नदियों, सरोवरों तथा वर्षा के महत्व का उल्लेख मिलता है। जल को शुद्ध रखने तथा उसका संरक्षण करने की प्रेरणा दी गई है। अग्नि ऊर्जा एवं परिवर्तन का प्रतीक है। यह जीवन की गतिविधियों को संचालित करती है। अग्नि के संतुलित उपयोग से मानव जीवन तथा पर्यावरण दोनों लाभान्वित होते हैं। वायु प्राणशक्ति का आधार है। स्वच्छ वायु मानव स्वास्थ्य एवं पारिस्थितिक संतुलन के लिए अनिवार्य है। वैदिक ऋषियों ने वायु की शुद्धता बनाए रखने पर बल दिया है। आकाश समस्त तत्वों का आधार एवं विस्तार का प्रतीक है। यह ब्रह्मांडीय संतुलन तथा प्राकृतिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है। वैदिक दृष्टि में आकाश के बिना अन्य तत्वों का अस्तित्व संभव नहीं है।

पंचमहाभूत सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि प्रकृति के किसी भी तत्व का असंतुलन सम्पूर्ण पर्यावरण को प्रभावित करता है। इसलिए इन सभी तत्वों का संरक्षण सतत विकास के लिए आवश्यक है।

4.3 मानव एवं प्रकृति का सह-अस्तित्व

वैदिक पर्यावरण-दर्शन का प्रमुख आधार मानव और प्रकृति के मध्य सह-अस्तित्व की भावना है। वैदिक ऋषियों ने मानव को प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका अभिन्न अंग माना है। मानव का कल्याण प्रकृति के कल्याण से जुड़ा हुआ है। इसलिए प्रकृति के साथ संतुलित एवं नैतिक व्यवहार आवश्यक है।

अथर्ववेद का मंत्र—

“माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।”

मानव और पृथ्वी के बीच मातृ-पुत्र संबंध को स्थापित करता है। यह संबंध अधिकार नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व का बोध कराता है। वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार मनुष्य का कर्तव्य है कि वह प्राकृतिक संसाधनों का संयमित उपयोग करे तथा उनके संरक्षण में योगदान दे।

5. सतत विकास लक्ष्य (SDGs) : अवधारणा एवं उद्देश्य

5.1 SDGs का परिचय

सतत विकास (Sustainable Development) ऐसी विकास प्रक्रिया है, जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं एवं संसाधनों को सुरक्षित रखती है। बढ़ती जनसंख्या, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण तथा जैव-विविधता के ह्रास जैसी वैश्विक समस्याओं के समाधान हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ ने सितंबर 2015 में 17 सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को स्वीकार किया। इन लक्ष्यों को वर्ष 2030 तक प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

सतत विकास लक्ष्यों का मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास, सामाजिक समानता तथा पर्यावरण संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित करना है। ये लक्ष्य गरीबी उन्मूलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, स्वच्छ जल, स्वच्छ ऊर्जा, जलवायु कार्रवाई तथा पारिस्थितिक संरक्षण जैसे विभिन्न क्षेत्रों को समाहित करते हैं। SDGs वैश्विक स्तर पर एक ऐसी विकास नीति प्रस्तुत करते हैं, जो मानव कल्याण के साथ-साथ प्रकृति के संरक्षण को भी समान महत्व देती है।

वैदिक साहित्य में भी प्रकृति के संरक्षण और संतुलित जीवन शैली पर विशेष बल दिया गया है। ऋग्वेद में समस्त प्राकृतिक शक्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की प्रेरणा मिलती है—

"द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।"

(यजुर्वेद 36.17)

अर्थात् आकाश, पृथ्वी, जल, वनस्पति तथा समस्त प्रकृति में शांति और संतुलन बना रहे। यह वैदिक भावना आधुनिक सतत विकास की अवधारणा से अत्यंत निकटता रखती है।

5.2 पर्यावरण से संबंधित प्रमुख SDGs

(क) SDG 6 : स्वच्छ जल एवं स्वच्छता (Clean Water and Sanitation)

SDG 6 का उद्देश्य सभी लोगों को सुरक्षित एवं स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना तथा जल संसाधनों का सतत प्रबंधन सुनिश्चित करना है। वर्तमान समय में जल प्रदूषण एवं जल संकट विश्व की प्रमुख समस्याओं में से हैं। यह लक्ष्य जल संरक्षण, स्वच्छता सुविधाओं के विस्तार तथा जल स्रोतों की रक्षा पर बल देता है।

वैदिक साहित्य में जल को जीवन का आधार माना गया है—

"आपो हि ष्ठा मयोभुवः।"

(ऋग्वेद 10.9.1)

अर्थात् "जल सुख और कल्याण प्रदान करने वाला है।" यह मंत्र जल संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

(ख) SDG 13 : जलवायु कार्रवाई (Climate Action)

SDG 13 का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करना तथा इसके प्रति जागरूकता और अनुकूलन क्षमता विकसित करना है। वैश्विक तापवृद्धि, अनियमित वर्षा, सूखा और बाढ़ जैसी समस्याएँ आज विश्व के सामने गंभीर चुनौती हैं।

वैदिक दृष्टिकोण में प्रकृति के विभिन्न तत्वों के संतुलन को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। यजुर्वेद में कहा गया है—

"वात आ वातु भेषजम्।"

(यजुर्वेद 36.17)

अर्थात् "वायु हमारे लिए औषधि के समान कल्याणकारी हो।" यह स्वच्छ वायु और स्वस्थ पर्यावरण के महत्व को स्पष्ट करता है।

(ग) SDG 14 : जलमंडलीय जीवन (Life Below Water)

यह लक्ष्य समुद्रों, नदियों, झीलों तथा अन्य जलीय संसाधनों के संरक्षण और उनके सतत उपयोग पर केंद्रित है। जल प्रदूषण, प्लास्टिक अपशिष्ट तथा समुद्री जैव-विविधता के क्षरण को रोकना इसका प्रमुख उद्देश्य है। वैदिक साहित्य में नदियों और जलाशयों को पवित्र एवं जीवनदायी माना गया है। जल स्रोतों की शुद्धता बनाए रखने और उनके सम्मान की भावना भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। जलमंडलीय जीवन का संरक्षण पर्यावरणीय संतुलन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

(घ) SDG 15 : स्थलीय पारिस्थितिकी का संरक्षण (Life on Land)

SDG 15 का उद्देश्य वनों, भूमि, वन्यजीवों तथा जैव-विविधता का संरक्षण करना है। बढ़ती वनों की कटाई, भूमि क्षरण तथा प्रजातियों के विलुप्त होने की समस्या को देखते हुए यह लक्ष्य अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अथर्ववेद में पृथ्वी के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए कहा गया है—

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।"

(अथर्ववेद 12.1.12)

अर्थात् "पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं।" यह मंत्र पृथ्वी एवं समस्त जीव-जगत के संरक्षण की प्रेरणा देता है।

इस प्रकार पर्यावरण से संबंधित SDGs और वैदिक पर्यावरण-दर्शन दोनों ही प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, पारिस्थितिक संतुलन तथा मानव कल्याण को महत्व देते हैं। आधुनिक SDGs जहाँ इन उद्देश्यों को वैश्विक नीति के रूप में प्रस्तुत करते हैं, वहीं वैदिक साहित्य उन्हें नैतिक एवं आध्यात्मिक आधार प्रदान करता है।

6. वैदिक पर्यावरण-दर्शन एवं SDGs का तुलनात्मक विश्लेषण

वैदिक पर्यावरण-दर्शन और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDGs) यद्यपि भिन्न कालखंडों की अवधारणाएँ हैं, तथापि दोनों का मूल उद्देश्य प्रकृति का संरक्षण, पर्यावरणीय संतुलन तथा मानव कल्याण सुनिश्चित करना है। वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण को नैतिक एवं आध्यात्मिक कर्तव्य माना गया है, जबकि SDGs इसे वैश्विक विकास नीति और व्यावहारिक कार्यक्रम के रूप में प्रस्तुत करते हैं। दोनों दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन उनकी समानताओं एवं समकालीन प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है।

6.1 जल संरक्षण एवं SDG 6

वैदिक साहित्य में जल को जीवन का आधार माना गया है। ऋग्वेद में कहा गया है—

"आपो हि ष्ठा मयोभुवः।"

(ऋग्वेद 10.9.1)

अर्थात् जल सुख, स्वास्थ्य और कल्याण प्रदान करने वाला है। वैदिक ऋषियों ने जल के संरक्षण तथा उसकी पवित्रता बनाए रखने पर बल दिया है। इसी प्रकार SDG 6 का उद्देश्य सभी लोगों को स्वच्छ जल एवं स्वच्छता की सुविधाएँ उपलब्ध कराना तथा जल संसाधनों का सतत प्रबंधन सुनिश्चित करना है। दोनों ही दृष्टिकोण जल को जीवन का आधार मानते हैं तथा उसके संरक्षण की आवश्यकता पर बल देते हैं।

6.2 पृथ्वी को माता मानना एवं SDG 15

अथर्ववेद का प्रसिद्ध मंत्र—

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।"

(अथर्ववेद 12.1.12)

पृथ्वी को माता और मानव को उसका पुत्र घोषित करता है। यह दृष्टिकोण पृथ्वी के प्रति श्रद्धा, संरक्षण और उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करता है। दूसरी ओर SDG 15 का उद्देश्य भूमि, वन, जैव-विविधता तथा स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्रों का संरक्षण करना है। वैदिक दृष्टिकोण भावनात्मक और नैतिक आधार प्रदान करता है, जबकि SDG 15 इसे व्यावहारिक नीतियों और संरक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से लागू करने का प्रयास करता है।

6.3 यज्ञ एवं पर्यावरण संतुलन तथा SDG 13

वैदिक संस्कृति में यज्ञ को पर्यावरणीय संतुलन और सामाजिक कल्याण का माध्यम माना गया है। यज्ञ का

व्यापक अर्थ प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, सहयोग और संतुलित जीवन-शैली से है। वैदिक चिंतन के अनुसार मानव और प्रकृति के मध्य संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। इसी प्रकार SDG 13 जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने पर बल देता है। दोनों अवधारणाएँ प्रकृति के संरक्षण और जलवायु संतुलन को मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक मानती हैं।

6.4 सह-अस्तित्व का सिद्धांत एवं SDGs 14 और 15

वैदिक दर्शन में समस्त जीव-जगत के प्रति करुणा और सह-अस्तित्व की भावना विद्यमान है। मनुष्य को प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका अभिन्न अंग माना गया है। यह विचार समुद्री जीवन (SDG 14) तथा स्थलीय जीवन (SDG 15) के संरक्षण के उद्देश्यों से मेल खाता है। दोनों ही दृष्टिकोण जैव-विविधता के संरक्षण तथा सभी जीवों के अस्तित्व के अधिकार को स्वीकार करते हैं।

6.5 संयमित उपभोग एवं SDG 12

वैदिक साहित्य में संसाधनों के संयमित एवं विवेकपूर्ण उपयोग पर विशेष बल दिया गया है। ईशावास्योपनिषद् का प्रसिद्ध मंत्र कहता है—

"तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।"

अर्थात् त्याग और संयम की भावना के साथ संसाधनों का उपयोग करो तथा लोभ से दूर रहो। इसी प्रकार SDG 12 उत्तरदायी उपभोग एवं उत्पादन (Responsible Consumption and Production) को प्रोत्साहित करता है। दोनों ही अनावश्यक उपभोग को हानिकारक मानते हैं तथा संसाधनों के संतुलित उपयोग की वकालत करते हैं।

तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वैदिक पर्यावरण-दर्शन और SDGs के मूल उद्देश्यों में गहरा साम्य है। दोनों ही प्रकृति संरक्षण, संसाधनों के सतत उपयोग, जैव-विविधता की रक्षा तथा मानव कल्याण को महत्व देते हैं। अंतर केवल इतना है कि वैदिक दृष्टिकोण आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित है, जबकि SDGs वैश्विक नीतियों एवं विकास कार्यक्रमों के माध्यम से इन उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास करते हैं। इस प्रकार वैदिक पर्यावरण-दर्शन आधुनिक सतत विकास की अवधारणा को सांस्कृतिक और नैतिक आधार प्रदान करता है।

7. निष्कर्ष

वैदिक पर्यावरण-दर्शन एवं संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDGs) दोनों ही मानव और प्रकृति के मध्य संतुलित संबंध स्थापित करने तथा पर्यावरणीय संरक्षण को सुनिश्चित करने पर बल देते हैं। वैदिक साहित्य में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि तथा समस्त जीव-जगत को जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। मानव और पृथ्वी के मध्य मातृ-पुत्र संबंध स्थापित करता है तथा पर्यावरण संरक्षण के नैतिक आधार को प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार SDGs भी पृथ्वी, जल, वन, जैव-विविधता तथा जलवायु संरक्षण को वैश्विक विकास का महत्वपूर्ण अंग मानते हैं। शोध से यह भी स्पष्ट हुआ कि दोनों का प्रमुख लक्ष्य प्रकृति संरक्षण एवं मानव कल्याण है। SDG 6

स्वच्छ जल, SDG 13 जलवायु कार्रवाई, SDG 14 जलीय जीवन संरक्षण तथा SDG 15 स्थलीय पारिस्थितिकी संरक्षण पर बल देते हैं। ये लक्ष्य वैदिक साहित्य में वर्णित पर्यावरणीय मूल्यों के अनुरूप दिखाई देते हैं। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वैदिक पर्यावरण-दर्शन और SDGs परस्पर पूरक हैं। वैदिक चिंतन जहाँ नैतिक प्रेरणा प्रदान करता है, वहीं SDGs उसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए वैश्विक रूपरेखा उपलब्ध कराते हैं।

***सहायक आचार्य,**
दर्शनशास्त्र विभाग
राजकीय डूंगर महाविद्यालय
बीकानेर, राजस्थान

8.संदर्भ सूची

1. ऋग्वेदः गीता प्रेस, गोरखपुर, 2020, पृ. 45–52
2. यजुर्वेदः गीता प्रेस, गोरखपुर, 2019, पृ. 112–118
3. अथर्ववेदः गीता प्रेस, गोरखपुर, 2021, पृ. 324–330
4. ईशावास्योपनिषद्ः गीता प्रेस, गोरखपुर, 2018, पृ. 8–15
5. तैत्तिरीय उपनिषद्ः गीता प्रेस, गोरखपुर, 2017, पृ. 25–31
6. पाण्डेय, राजेन्द्रः वैदिक संस्कृति एवं पर्यावरण चेतना, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 2018, पृ. 88–96
7. मिश्र, विद्यानिवासः भारतीय चिंतन और पर्यावरण, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृ. 102–110
8. उपाध्याय, बलदेवः वैदिक साहित्य और संस्कृति, शारदा निकेतन, वाराणसी, 2015, पृ. 145–152
9. द्विवेदी, कपिलदेवः वेदों में पर्यावरण विज्ञान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2019, पृ. 56–64
10. सिंह, शिवबहादुरः पर्यावरण अध्ययन, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली, 2020, पृ. 120–128
11. संयुक्त राष्ट्र संघः सतत विकास लक्ष्य (SDGs) रिपोर्ट, न्यूयॉर्क, 2023, पृ. 35–42
12. भारत सरकार, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालयः पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास रिपोर्ट, नई दिल्ली, 2022, पृ. 54–61
13. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, अलकाः पर्यावरण अध्ययन, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2021, पृ. 92–100
14. चौबे, लक्ष्मीकान्तः वैदिक दर्शन और समकालीन पर्यावरण चिंतन, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2019, पृ. 133–140